

तेरे दरबार में इस सिर का झुकना भी जरूरी था,

तेरे दरबार में इस सिर का झुकना भी जरूरी था,
मेरी आँखों से आंसू का टपकना भी जरूरी था,
बताओ क्या तुम्हे बाबा पता है सब भला तुम को.
जीत ने के लिये हारना भी जरूरी था,

भटक ते नहीं जो दर दर तुम्हारा द्वार न मिलता,
सताये जो नहीं जाते तुम्हारा प्यार न मिलता,
तो क्या होता हमे जो खाटू का ये धाम न मिलता,
मिला है आज जो बाबा हमे वो नाम न मिलता,
मगर अब याद आता है वो जग की ठोकरे खाना,
कंकरो से भरे रस्तो पे चलना भी जरूरी था,
तेरे दरबार में इस सिर का झुकना भी जरूरी था,

ये मांगू और क्या तुमसे तुम्हारा साथ काफी है,
मेरी हर जीत के पीछे तुम्हारा हाथ काफी है,
मेरे होठो से निकले बस तुम्हारा नाम काफी है,
मेरे भजनो से रिजो बस प्रभु वो भाव काफी है,
मगर अब बेफिक्र है हम तुम्हारा साथ है सिर पे,
सुभम रूपम को खाटू से गुजरना भी जरूरी था,
तेरे दरबार में इस सिर का झुकना भी जरूरी था,

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/10922/title/tere-darbar-me-is-ser-ka-jhukna-bhi-jaruri-tha>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |